Since - 1952

गीतांजलि

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान (जयपुर) की पत्रिका

Newsletter of the Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan

संस्करण-003/25 प्रकाशन- फरवरी 2025

शुभकामना संदेश

बाल मंदिर परिवार को पत्रिका के तृतीय संस्करण के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। पत्रिका नित नयी ऊंचाईयों पर पहुंचे। आशा है इससे छात्रों के मानसिक विकास की उन्नति होगी, अच्छे संस्कार, अच्छी भाषा और अच्छे विचारों का उदय होगा। बालकों की नई सोच और सुंदर रचनाओं से पत्रिका सराबोर होगी। आपकी प्रगति के लिए मैं सदैव प्रार्थना करती रहूंगी।

मेरी ओर से पत्रिका के तृतीय संस्करण के प्रकाशन की बहुत सारी शुभकामनाएं...

कृष्णा जसदेव सिंह
स्व. गीता दीदी की सुपुत्री

अगस्त 2023 में हमने संस्थान की एक लघु-पत्रिका अर्थात् न्यूज-लैटर प्रकाशित करने की दिशा में पहला कदम उठाया था। कई महीनों के विचार-विमर्श के पश्चात "गीतांजलि" का आठ पृष्ठ का प्रथम संस्करण फरवरी 2024 में गीता बजाज महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की पत्रिका के रूप में प्रकाशित हुआ। इसे बहुत पसंद किया गया, और जैसे कि मेरी इच्छा थी, हमारे उच्च -माध्यमिक विद्यालय परिवार ने भी इस से जुड़ने की इच्छा जाहिर की और नतीजे के तौर पर छह महीने बाद अगस्त 2024 में इस पत्रिका का द्वितीय संस्करण पूरे गीता बजाज संस्थान की पत्रिका के रूप में 8 से बढ़कर 12 पृष्ठों पर छपा।

इस नये रूप में न्यूज-लैटर को बहुत पसंद किया गया - न सिर्फ संस्थान के भीतर बल्कि संस्थान से जुड़ें समाज के अन्य लोगों से भी हमें अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

इसी सफलता से उत्साहित होकर हमने "गीतांजलि" के इस तृतीय संस्करण को 16 पृष्ठ का कर दिया है, ताकि न सिर्फ संस्थान की समस्त गतिविधियों की जानकारी इसके द्वारा उपलब्ध कराई जा सके अपितु हमारे स्कूल एवं कॉलेज के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को भी अपनी कृतियों के लिए एक प्रकाशन का मंच उपलब्ध कराया जा सके।

हमारे संपादक मंडल के प्रत्येक सदस्य की मेहनत से अब इस न्यूज-लैटर का एक निश्चित प्रारूप बन चुका है, और मैं आशा करता हूँ की यह आपको पसंद आएगा। हमारी इच्छा है कि संस्थान परिवार के अन्य सदस्य भी इससे जुड़ें और इसके प्रकाशन में अपना योगदान दें, ताकि यह अर्द्धवार्षिक पत्रिका गीता बजाज संस्थान परिवार का सही तरह से प्रतिनिधित्व करे और इसमें संस्थान की एक अच्छी छवि प्रतिबिंबित हो।

शुभकामनाओं सहित,

गुरदेव सिंह
संस्थान मंत्री

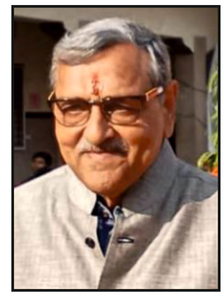

गीतांजलि न्यूज लेटर के तीसरे संस्करण के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्रिका हमारे शैक्षणिक और सह शैक्षणिक गतिविधियों का दर्पण है, जो हमारे विद्यार्थियों की प्रगति और संस्थान की उपलब्धियों को उजागर करता है। हमारी संस्था का उद्देश्य न केवल विद्यार्थियों के कौशल को उजागर करना है बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व को विकसित करना है।

मैं सभी विद्यार्थियों को आगामी परीक्षा के लिए शुभकामनाएं देता हूं। यह समय आपके समर्पण, मेहनत और ज्ञान की परीक्षा का हैं। आपकी प्रतिभा ही आपका खजाना है। आपने अब तक जो भी सीखा है, वह आपके उज्ज्वल भविष्य की नींव है। मैं जानता हूं आप सभी अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करेंगे और सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष हम नए कार्यक्रम और कई परियोजनाओं को शूरू करने जा रहे हैं जो आपके कौशल को बढ़ाने में आपकी मदद करेंगे। मैं गीतांजलि की पूरी टीम को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए बधाई देता हूं। यह संस्करण भी विद्यालय एवं महाविद्यालय की गतिविधियों को उजागर करते हुए सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

धन्यवाद !

राजेश पाटनी
कोषाध्यक्ष

पिछले सात दशकों के दौरान संस्थान से जुड़ीं प्रसिद्ध हस्तियां

क्र.सं.	नाम	पद
1	स्वर्गीय हीरा लाल शास्त्री	राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री
2	स्वर्गीय श्रीमती सावित्री भारतीय	प्राचार्य महारानी कॉलेज, जयपुर (हमारी प्रथम अध्यक्ष)
3	स्वर्गीय मोहनलाल सुखाड़िया	पूर्व मुख्यमंत्री, कर्नाटक के राज्यपाल
4	स्वर्गीय हरिदेव जोशी	पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान, मेघालय और असम के राज्यपाल
5	स्वर्गीय पूर्ण चंद्र जैन	स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी
6	स्वर्गीय जगन प्रसाद रावत	स्वतंत्रता सेनानी, मंत्री उत्तर प्रदेश
7	स्वर्गीय श्रीमन्नारायण	राज्यपाल, गुजरात
8	स्वर्गीय राम निवास मिर्धा	केंद्रीय मंत्री
9	स्वर्गीय शिव चरण माथुर	पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान
10	स्वर्गीय श्रीमती रामेश्वरी नेहरू	स्वतंत्रता सेनानी
11	स्वर्गीय राजन नेहरू	स्वतंत्रता सेनानी
12	स्वर्गीय कमल नयन बजाज	स्वतंत्रता सेनानी , उद्योगपति
13	स्वर्गीय घनश्याम दास बिड़ला	स्वतंत्रता सेनानी , उद्योगपति
14	स्वर्गीय राधा कृष्ण बजाज	स्वतंत्रता सेनानी , सर्वोदयी नेता
15	स्वर्गीय महादेवी वर्मा	लेखिका, कवयित्री
16	स्वर्गीय काका कालेलकर	स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी
17	स्वर्गीय जगन्नाथ सिंह मेहता	आई.ए.एस.
18	स्वर्गीय राम नारायण चौधरी	स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी
19	स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद चौधरी	स्वतंत्रता सेनानी, संस्थापक / संपादक , दैनिक नवज्योति
20	स्वर्गीय तेज करण डंडिया	प्रख्यात शिक्षाविद , हमारे पूर्व अध्यक्ष
21	स्वर्गीय रामेश्वर नेवतिया	उद्योगपति
22	स्वर्गीय भागीरथ कनोडिया	उद्योगपति
23	स्वर्गीय मुरलीधर डालमिया	उद्योगपति
24	स्वर्गीय जैनेंद्र कुमार जैन	साहित्यकार
25	स्वर्गीय जवाहर लाल जैन	स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी
26	स्वर्गीय गोकुल भाई भट्ट	स्वतंत्रता सेनानी , गांधीवादी
27	स्वर्गीय हरीश चंद्र गोलछा	उद्योगपति
28	स्वर्गीय सिद्धराज ढड्डा	स्वतंत्रता सेनानी,गांधीवादी
29	स्वर्गीय दिवाकर शास्त्री	शिक्षाविद् संस्थापक, वनस्थली विद्यापीठ

हमारे प्रेरणास्रोत – हमारे संस्थापक

तेजकरण जी डंडिया

समाज में 'मास्टरजी' के नाम से अपनी पहचान बनाने वाले वयोवृद्ध शिक्षाविद् स्व. श्री तेजकरण डंडिया ने महावीर दिगंबर जैन शिक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएं दीं। वे एक आदर्श शिक्षक, गणितज्ञ तथा समाजसेवी के रूप में जाने जाते हैं।

उनकी गणित की 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हें "लीजेंड इन एजुकेशन" की उपाधि और "अवंतिका रत्न" से भी सम्मानित किया जा चुका है।

राज्य में शिक्षा के विकास में और बाल मंदिर परिवार और इसकी प्रगति में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सदैव याद किया जाएगा...

"मंजिल मिले या न मिले, इसका गम नहीं।
मंजिल की जुस्तजू में मेरा कारवां तो है।।"

कोमलचन्द जी पाटनी

सादगी और विनम्र व्यक्तित्व के धनी, उद्योगपति, समाजसेवी एवं शिक्षाविद् श्री कोमलचंद जी पाटनी का गीता बजाज संस्थान की प्रगति में अमूल्य योगदान रहा है।

समाज सेवा और बच्चों की शिक्षा के प्रति आपके लगाव के कारण ही सन् 1977 में आप गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान से जुड़े । आपके शिक्षा के प्रति निस्वार्थ समर्पित भाव के कारण ही सन् 1994 में आप संस्थान की कार्यकारिणी द्वारा सर्वसम्मति से गीता बजाज संस्थान के अध्यक्ष चुने गए।

सन 1995 में गीता बजाज (दीदी) जी के आकस्मिक निधन के पश्चात संस्थान की सम्पूर्ण जिम्मेदारी आपके ऊपर आ गई एवं इस जिम्मेदारी को आपने सदैव निस्वार्थ भाव से एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में सुचारू रूप से निभाया। आपने श्री जसदेव सिंह जी के साथ मिलकर निरन्तर संस्थान की प्रगति के लिए कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये और संस्थान को सुचारू रूप से संचालित किया ।

आप सन् 2009 तक संस्थान में अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे और आपने संस्थान के उत्थान में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आप जयपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष, राजस्थान चैंबर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष और स्वच्छ नगर संस्थान के सचिव भी रहे , साथ ही कई वर्षों तक जयपुर समारोह कार्यक्रम में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही ।

आपकी दृढ़ता और कार्य के प्रति समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे। संस्थान आपके द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों एवं सहयोग के लिए सदैव आपका आभारी रहेगा। आपका प्रभावशाली प्रशासनिक कौशल और समर्पित नेतृत्त्व हमे हमेशा मार्गदर्शित करता रहेगा।

पूजनीय गीता दीदी की 29वीं पुण्यतिथि

ममता और सादगी की मूर्ति पूजनीया स्वर्गीय गीता दीदी की 29वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 3 अगस्त 2024 को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गीता बजाज बाल मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में अंतर विद्यालयी भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 11 विद्यालयों के प्रतिभागियों ने जूनियर वर्ग एवं सीनियर वर्ग में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायकगण के रूप में मशहूर गायक श्री जितेंद्र राणा एवं श्री बुंदू खान उपस्थित रहे। सभी प्रतिभागियों द्वारा मनमोहक भजन प्रस्तुतियां दी गईं। विजेता प्रतिभागियों को बाल मंदिर विद्यालय की तरफ से पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए। निर्णायकगण श्री जितेंद्र राणा एवं श्री बुंदू खान जी द्वारा सभी विद्यार्थियों को भारतीय संगीत एवं संस्कृति से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई। बाल मंदिर विद्यालय प्रधानाचार्य जी द्वारा निर्णायकगण को स्मृति चिन्ह व विभिन्न विद्यालयों से आए प्रतिभागियों एवं शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रगति का सफर –
1952 से अब तक
जीवन संस्कारों की झाँकी

स्वर्गीय श्रीमती गीता दीदी जुलाई 1952 में 'बाल मंदिर हैप्पी स्कूल' की स्थापना के साथ ही "वार्षिक कार्य विवरण" के रूप में एक प्रगति रिपोर्ट प्रकाशित करती थीं, जिसमें वे अपने कई दानदाताओं सहित विभिन्न स्रोतों से प्राप्त धन और किए गए व्यय और बचत या हानि का लेखा–जोखा प्रकाशित करती थीं. इस में पिछले 12 महीनों के दौरान स्कूल के विकास में हुई प्रगति और इस कार्य में सामने आ रही दिक्कतों की जानकारी भी रहती थी।

समय के साथ मात्र कुछ पन्नों का यह पैम्फलेट एक स्कूल पत्रिका के रूप में विकसित हुआ और इसे हर साल प्रकाशित करना एक स्थाई परंपरा बन गई। 2019 में गीता दीदी के शताब्दी समारोह के अवसर पर उनके जीवन और उन्हें जानने वालों तथा जिन व्यक्तियों ने बीत गए दशकों में उनके साथ काम किया था, उन के संस्मरणों की एक स्मारिका भी प्रकाशित की गयी जिसमें उनकी अन्तरंग यादों को समर्पित लेख शामिल थे।

विगत 72 वर्षों के सफर में संस्था की स्थापना से लेकर अब तक गीता बजाज बाल मंदिर का यह प्रकाशन –"जीवन झांकी" (तब) और "गीतांजलि" (अब) –संस्थान के निरंतर होते विकास की साक्षी रहा है। पूजनीय गीता दीदी द्वारा आरंभ की गई यह स्मारिका उनकी दूरदर्शिता का ही प्रतिबिंब है। यह पत्रिका सात दशकों से अधिक की यात्रा – जो आज भी जारी है – में गीता बजाज बाल मंदिर परिवार की कई पीढ़ियों के लिए अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है।

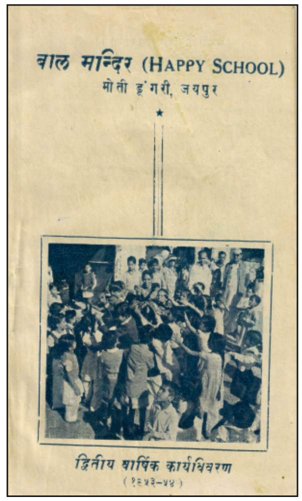

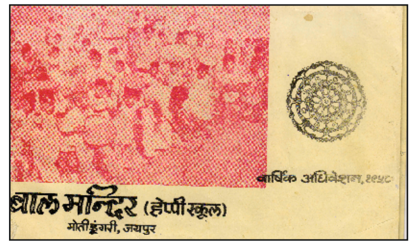

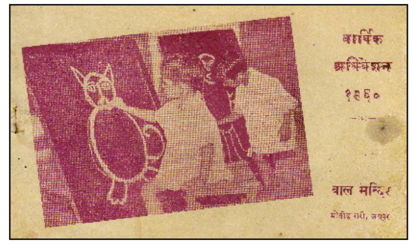

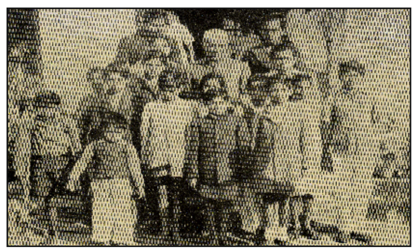

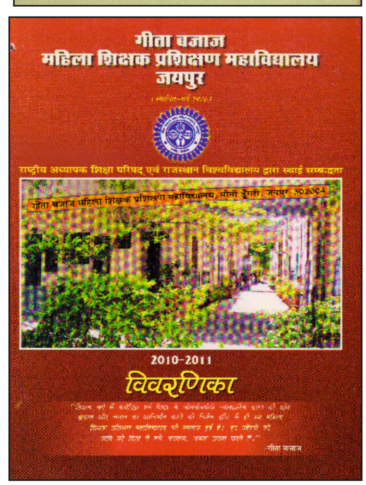

भारत के प्रथम राष्ट्रपति
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का संदेश

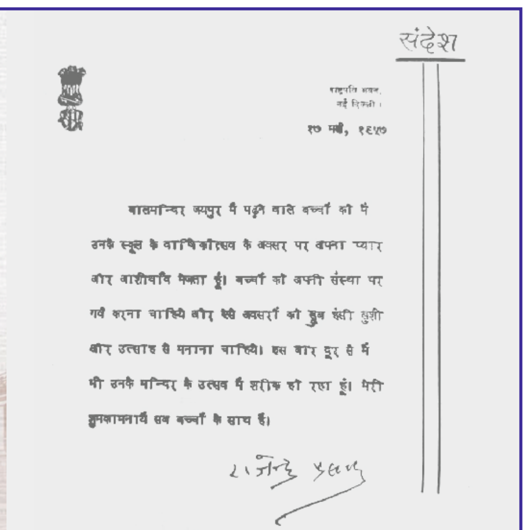

संदेश

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

२० मई, १९५७

बालमन्दिर जयपुर में पढ़ने वाले बच्चों को मैं उनके स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपना प्यार और आशीर्वाद भेजता हूँ। बच्चों को अपनी संस्था पर गर्व करना चाहिये और ऐसे अवसरों को खूब हंसी खुशी और उत्साह से मनाना चाहिये। इस बार दूर से मैं भी उनके मन्दिर के उत्सव में शरीक हो रहा हूं। मेरी शुभकामनायें सब बच्चों के साथ हैं।

राजेन्द्र प्रसाद

मनुष्य कर्म से महान होता है, जन्म से नहीं। – आचार्य चाणक्य

गीता दीदी की कहानी - एक समर्पित जीवन

राजस्थान के सीकर जिले में नीम का थाना कस्बे के श्री माधोलाल चौधरी की पुत्री गीता बजाज का जन्म 5 मार्च, 1919 को खण्डवा (मध्यप्रदेश) में महाशिवरात्रि के दिन हुआ। दो भाइयों और आठ बहनों के परिवार में यह चौथी सन्तान थीं। तीसरी कक्षा में 15 वर्ष की छोटी सी उम्र में गीता के हाथ पीले कर दिए गए। पति थे सीकर जिले के काशी का बास नामक ढाणीनुमा गांव के श्री गिरधारी लाल जी बजाज–जाने माने स्वाधीनता सेनानी, गांधीजी के मुंह बोले पांचवे बेटे जमनालाल जी बजाज के भतीजे और बींजराज जी बजाज के सबसे बड़े बेटे ।

विवाह के बाद वे पति के साथ वर्धा गई, जहां बापू का आशीर्वाद और सान्निध्य मिला। पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। 17 वर्ष की अल्पायु में ही गीता बजाज को क्रूर नियति ने वैधव्य की ज्वाला में झोंक दिया। उस दारुण घड़ी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का संवेदना संदेश गीता जी के जीवन में एक नई रोशनी लेकर आया। बापू के शब्दों ने उन्हें न केवल जीने की लालसा दी, बल्कि देश और समाज के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा शक्ति और उत्कट इच्छा भी। गांधीजी ने लिखा–''चि. गीता, जैसा तुम्हारा नाम है, वैसा ही रहना। विधवापन और सधवापन मन मरजी की चीज है। मरना–जीना किसी के हाथ में नहीं है, इसलिए शांत रहो, और अपने को सेवार्पण करो ।"

गीता जी ने वैसा ही किया। पति बिछोह के अपने रंज और गम को भूल उन्होंने अथक मेहनत कर अच्छी शिक्षा प्राप्त की। एक जवान अनपढ़ विधवा के मार्ग में जो विपदाएं, कठिनाइयाँ और मुसीबतें आ सकती थीं, वे आई, पर सभी का सामना करते हुए गीता बजाज अपना रास्ता स्वयं बनाती चली गई।

पति को खोने के तीन माह पश्चात् उन्होंने उनकी निशानी एक पुत्री को जन्म दिया। पर उनका शैक्षिक जीवन टूटता–जुड़ता रहा। बड़े भ्राता स्व. सिद्ध गोपाल चौधरी संबल बने, निराशा के घोर क्षणों में उन्होंने बहन को सहारा दिया, उसका मनोबल नहीं टूटने दिया। वनस्थली विद्यापीठ से मिडिल पास किया। बनारस से मैट्रिक और पिलानी से इण्टरमीडिएट किया। सन् 1942 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बी.ए. में प्रवेश लिया ही था कि देश में आजादी के दीवानों का "करो या मरो" का नारा गूँजा। डॉ. गेरोला के विद्यार्थियों के लिए आह्वान "स्वतंत्रता यज्ञ में कूद पड़ो" को सुनकर गीता जी भी बैठी नहीं रह सकीं और उस यज्ञ में अपने हिस्से की आहुति देने के लिए निकल पड़ीं। परिणाम वही हुआ जो होना था, बनारस विश्वविद्यालय से निष्कासन।

गीताजी के जीवन में राजनैतिक पृष्ठभूमि थी।पूज्य पिताश्री की उन्मुक्त विचारधारा और बापू के स्वतंत्रता संग्राम से प्रभावित उनकी कार्यवृत्ति दोनों चाचा, राजस्थान के ख्याति प्राप्त कर्मठ कांग्रेसी नेता और महात्मा गांधी के सहयोगी स्व. रामनारायण चौधरी और स्वाधीनता सेनानी कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी के देश प्रेम से आप्लावित साहसिक क्रिया–कलाप और दूसरी ओर ससुराल पक्ष से जुझारू व्यक्तित्त्व के धनी स्व. जमनालालजी बजाज। इन सब के साथ, बापू के रचनात्मक कार्यावली से घनिष्ट संयुक्ति। साथ ही साबरमती आश्रम, वनस्थली विद्यापीठ, हटुंडी और नारेली आश्रम और जयपुर राज्य प्रजामंडल के प्रभाव ने स्वतंत्रता संग्राम में तन और मन से कूद पड़ने की प्रेरणा दी। परिणाम की चिंता न करते हुए सन् 1942 के "भारत छोड़ो आन्दोलन" में अंग्रेजी दासता से देश को मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाए स्व. बी.पी. केसकर, डॉ. राधेश्याम, स्व. सादिक अली, श्रीमती अरुणा आसफ अली और अन्य हस्तियों का साथ पा वह आजादी के संघर्ष में सक्रिय हो गई। महिला संगठन का कार्य किया, छिपकर रहते हुए बम बनाए, वेश और स्वरूप बदलकर (अधिकतर सिर पर साफा बाँधे पुरुष वेश में) यह बहादुर और निर्भीक महिला आज़ादी के संग्राम में जुटी रही । आखिरकार दिल्ली में पकड़ी गई। सजा मिली, लाहौर जेल की काल कोठरी में बंद कर दी गई, बाल पकड़कर घसीटी गई। अँधेरी और बिच्छू जैसे विषैले कीड़े–मकोड़ों से भरी नितांत स्वास्थ्यघातक छोटी सी कोठरी में जहां पूरे पांव भी न फैल सके, उसे डाल दिया गया।

क्रमशः .....

नोटः– (कहानी अगले अंक में भी जारी रहेगी)

Our Eminent College Alumnus

My memorable journey at Geeta Bajaj WTT College.
Malancha Sen Gupta MPS,
Tilak Nagar, Jaipur

I am filled with nostalgia and gratitude, as I sit back and reflect on my journey at Geeta Bajaj WTT college. I was warmly welcomed by the lecturers. My time at college was truly transformative. The college 's emphasis on academics, extracurricular activities and practical knowledge has been invaluable in my professional and personal life. My special thanks to Deepti ma'am who played a significant role in shaping my journey.

A life of purpose
Mrs. Seema Pandey
(1989-90) Batch

My journey with the esteemed institution started in 1989,in the gracious presence of the great Gandhian, freedom fighter Geeta Bajaj Ma,am. She guided us to be self dependent in every field. She was lively , empathetic and a mentor for us . Today as a Teacher from St Soldier Public School,I still cherish her memories and guidance. I am still bearing her guiding light of knowledge.

Our Eminent School Alumnus

बृजकिशोर श्रीवास्तव (प्रतिष्ठित नृत्यक व कोरियोग्राफर)

मैंने सत्र 1990–91 में गीता बजाज बाल मंदिर से नवीं कक्षा उत्तीर्ण की। यह वर्ष मेरे जीवन में एक दिव्य स्वप्न जैसा रहा। मेरे चरित्र निर्माण एवं एक प्रतिष्ठित नृत्यक बनने की नींव इसी समय रखी गई। यहाँ के शिक्षक–शिक्षिकाओं के स्नेह, आत्मीय व्यवहार और सबसे ज्यादा गीता दीदी के लाड़–दुलार और प्रोत्साहन ने न केवल मुझे, अपितु बाल मंदिर के सभी विद्यार्थियों को सफलता के असीमित आसमान में उड़ान भरने योग्य बनाया। आज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नृत्यक व कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान में बाल मंदिर की अहम् भूमिका है। मैं गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान को धन्यवाद व शुभकामनाएँ देता हूँ।

पंडित आलोक भट्ट (प्रतिष्ठित संगीतज्ञ)

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान के सभी सदस्यों को नमस्कार

मैं आलोक भट्ट संस्था के प्राथमिक विभाग से जुड़ा रहा। गांधी जयंती के अवसर पर होने वाले सेवा सप्ताह एवं अन्य संगीत प्रतियोगिता में भी मैंने भागीदारी निभाई। आदरणीय गीता बजाज जी का आशीर्वाद मुझे भरपूर मिला। आदरणीय कृष्णा जसदेव सिंह एवं आदरणीय जसदेव सिंह जी का सानिध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। संस्थान के सभागार जो सबसे पहले बना उसमे भी श्रम दान का सौभाग्य मिला। जीवन में जो कुछ भी हासिल हुआ है उसमे संस्थान की महती भूमिका है।

Special Visitors

Welcome Home Gaurav & Nikita
(Great Grandson & Great Grand Daughter-in-law of late Mrs. Geeta Bajaj)

सफलता का सूत्र : जल्दी उठो, कड़ी मेहनत करो। – जे पॉल गेट्टी

स्वतंत्रता दिवस समारोह – 15 अगस्त 2024

मुख्य अतिथि श्री एन.के. जैन (पूर्व अध्यक्ष, राज्य मानवाधिकार आयोग)

The Power of a Simple Expression - Saying "Thank You"

When grappling with problems, it can be hard to appreciate the things we have on the challenges we face.And we can easily become complacent or full of complaints, driving into further misery.

Nicherien Daishonin the thirteen century Japanese sage teaches that the key to breaking this inertia and transforming our circumstances begins in our heart. Being able to have deep appreciation for everyone around us is proof of our human revolution.

Appreciation for others accelerates that inner transformation .

" Thank you" is a magical expression.It energies us when we say it to others ,and encourages us when we hear it said to us .

When we speak or hear the words " thank you" , the mask falls from our hearts and we communicate on a deep level .

Thank you is the essence of non violence.It contains respect for the other person, it has strength. A person who can sincerely say thank you has a healthy,vital spirits; each time we say those words ,our heart sparkle and life force wellsup within .

Having gratitude and appreciation for the countless people and things support our lives that awareness, that feelings that joy will invite even greater happiness.Rather than being thankful because we are happy being thankful it self will make us happy

I hope that everyonce in a while when you will look your family members or your elders in the eye and say Thank you.Instead of eating dinner together in silence, take the time, express your appreciation.It may seem a bit embarrassing at first ,but you will see it changes your life .

From the teachings of NicherienDaishonin, who was a Japanese Buddhist priest and philosopher.

Contributed by Mrs Kuljit G Soin (a member of our Management Committee)

कृष्ण जन्माष्टमी समारोह – 26 अगस्त 2024

हमारी स्वर्णिम परम्परा

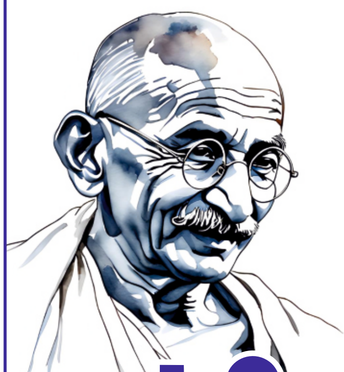

गांधी
शैक्षिक शिविर
2024

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान शायद राजस्थान का एकमात्र शैक्षिक संस्थान है जहाँ पाँच दिवसीय गाँधी शैक्षिक शिविर का आयोजन किया जाता है, जिससे संस्थान के छात्र-छात्राओं में गाँधीवादी मूल्यों व आदर्शों को विकसित किया जाता है।

इस वर्ष गाँधी शैक्षिक शिविर का आयोजन 28 सितम्बर 2024 से 02 अक्टूबर 2024 तक संस्थान प्रांगण में किया गया। शिविर के पाँचो दिनों का उद्घाटन राजस्थान के प्रमुख शिक्षाविदों द्वारा किया गया। प्रो. रश्मि जैन (IQAC Cordinator NAAC, UOR), डॉ. सौमित्र नाथ झा (रजिस्ट्रार, Mahatma Gandhi Institute of Social Science), डॉ. बी.एम. शर्मा (Former Chairman RPSC & Director, Mahatma Gandhi Institute), श्रीमती पल्लवी (Trainer, योगा एवं नेचुरोपेथी), एवं Dr. Nimali Singh (Principal, Maharani College, Jaipur)

शिविर में प्रतिदिन प्रातः छात्र-छात्राओं द्वारा श्रमदान किया गया। उसके उपरांत विभिन्न अन्तर्महाविद्यालयी, अन्तर्विद्यालयी व अन्तर्सदनीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिसमें जयपुर के विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया जिसमें छात्रों ने हस्त शिल्प व लघु उद्योग सम्बन्धी कौशल सीखा। इन कार्यशालाओं में बनाई गई वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थान द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

प्रार्थना
रामधुन

गांधी शैक्षिक शिविर

By Book or By Crook

"By Book or By Crook" is a phrase that suggests achieving success or acquiring knowledge through either legitimate means (by books) or illegitimate means (by crook). This phrase is often used to convey the idea that some individuals will stop at nothing to attain their goals, whether it's through hard work and dedication or through cheating and deception.

The phrase is thought to have originated from a medieval Latin phrase "Aut libris aut libraris," which translates to "Either by books or by robbery." Over time, the phrase evolved into its current form, with "crook" replacing "robbery" to convey a sense of dishonesty or deceit.

In modern times, the phrase "By Books or By Crook" is often used in a humorous or satirical way to describe the lengths to which people will go to achieve success or gain.

Nikita Kumawat
B.Ed. Ist Year

The Visionary Entrepreneur
Ratan Tata (1937-2024)

Ratan Tata was one of India's most respected business leaders, who played a pivotal role in transforming the Tata Group into a global conglomerate . He was also widely recognized for his extensive philanthropic efforts .

Under his leadership, the Tata Group made several landmark acquisitions, including Jaguar Land Rover and Corus Steel, and he was also known for launching the Tata Nano, an ultra-low-cost car aimed at making transportation affordable for the masses . He was admired for his humility and simplicity, and his dedication to ethical leadership and social responsibility made him a role model for everyone . He received several prestigious awards, including the Padma Bhushan and Padma Vibhushan, two of India's highest civilian honors .

Tata was a member of a prominent family of Indian industrialists and philanthropists and was credited with pioneering much of the country's industrial establishments and practices. He was widely admired not only for his stewardship of one of the country's largest conglomerates but also for his personal ethics and philanthropic activities . He is regarded as a visionary leader, and his legacy is one of compassion and innovation that transcends the confines of the corporate realm to impact millions of ordinary lives .

Sara Zaki
B.Ed. Ist Year

RAINBOW

Rainbow is derived from the word 'Renboga' which is an old English word. It is made of two words 'regn' which means rain and 'Boga' which means curve, bent, or arched.

Why Rainbows are so fascinating?

Rainbows are very special and attractive. It is a wonderful creation of nature that fascinates people. All age groups, kids, youngsters, elderly people, everybody loves to see a rainbow after a rainy day. It is all about the beauty and rareness of the rainbow that makes it more special. People find it lucky if they get to see a rainbow. There is also a rainbow thing called double rainbow which is very rare and it is said that there are two rainbows in the sky at the same time. Isn't it fascinating!

Bhoomika Tejwani
B.Ed. Ist Year

Order of Adjectives

1	Opinion	Beautiful, Delicious, Fascinating
2	Size	Small, Large, Tiny
3	Age	Old, Young, New
4	Shape	Round, Square, Triangular
5	Color	Red, Blue, Green
6	Origin	American, French, Japanese
7	Material	Wooden, Metal, Glass
8	Purpose	Cooking, Gardening, Decorative
9	Quantity	Two, Several, Many
10	Condition	Clean, Broken, Worn
11	Sound/Texture	Loud, Soft, Rough

The beautiful small old round blue American wooden cooking two clean loud puppy fascinated the young Japanese gardener.

Nishtha Sharma
B.Ed. Ist Year

Seminar Presentation by B.Ed. Students

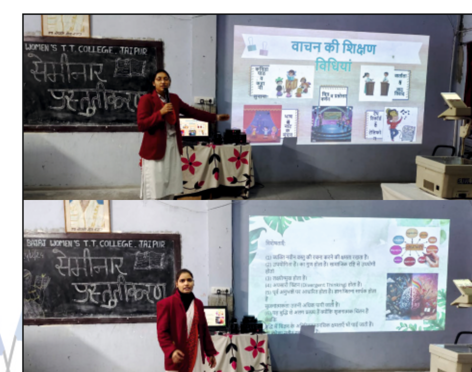

गीता बजाज शैक्षिक संस्थान

प्रिय गीता बजाज शैक्षिक संस्थान,
आदर्श व मूल्यों से बनी यह महान्।

जिसकी नींव में 'गीता' के कर्म का सार है,
जिसमें व्यक्तित्त्व कृतित्त्व की धार है।
शिक्षा में समर्पण से जाने तुझे जहान है,
तेरे आदर्श व मूल्यों से बनी तू महान् है।

सतत् उन्नति व प्रगति का तू ही आधार है,
तेरी ज्ञान –ज्योति से परिवर्तित सकल विचार है।
तेरी रोशनी की स्निग्धता में बनाई सबने पहचान है,
तेरे आदर्श व मूल्यों से बनी तू महान् है।

गांधी ,टैगोर की शिक्षा का जहां है प्रवाह ,
'सर्वधर्म समभाव' का बहता जहां दरियाव।
जीवन धन्य बना दिया देकर तूने ज्ञान,
तेरे आदर्श व मूल्यों से बनी तू महान।

डॉ. शकुंतला दर्जी
सहायक आचार्य (हिन्दी)

सफलता

मंजिल अभी दूर है,
पर तुझ में भी एक गुरूर है।
आयेगी रस्ते में मुश्किल अनेक,
होगी मुश्किलें आसान कर इरादे नेक,
हर समुद्र पार कर जाएंगे।
मेहनत की नाव से हर लड़ाई लड़ जाएंगे,
इतना मुश्किल भी नहीं है।
बस थोड़ा मेहनत और उम्मीद साथ रख,
हर रास्ता होगा आसान,
तू मन में आस रख ।

सलोनी कंवर
कक्षा 9 , बाल मंदिर

बचपन

कहां गया वो बचपन हमारा
जिस पल में खुश रहता है जग सारा
खेल खुद में बीतता है दिन सारा
याद आता है वो दोस्ताना हमारा
कहां गया वो बचपन हमारा

खाते हम जब रंग बिरंगे टॉफियां
याद आती वो खट्टी मीठी गोलियां
एक एक रुपए जमा कर दस बन जाता
भागते लेने कुल्फी जब कुल्फी वाला आता
कहां गया वो बचपन हमारा

दोपहर में जब नींद न आती
तो खेलने की याद सताती
मां का रोज कहानियां सुनाना
पापा के साथ जब घूमने जाना
कहां गया वो बचपन हमारा

छुट्टियों में नानी के घर जाना
गर्मी में मीठे मीठे जब आम खाना
आता जब बेचने खिलौने वाला
तो मांगते पैसा गुल्लक वाला
कहां गया वो बचपन हमारा
कहां गया वो बचपन हमारा

मुस्कान साहू
कक्षा 9 , बाल मंदिर

ग़ज़ल

कोई जो शख़्स लगे तुमको मसीहा होगा,
तो हजारों गम के समंदर से वो गुजरा होगा।

चढ़ाया होगा कई बार सूली पे जिसे ,
फिर भी बदले में किसी को ना सताया होगा।

चूनो ना फूल यूं बेपरवाह यारों गुलशन से,
रखो खयाल की दिल गुल का भी दुखता होगा।

किसी की आंख का आंसू जो पोछना जाने ,
उसी के वास्ते जन्नत में आसरा होगा।

तू चोट खाके भी बस नेकियाँ ना छोड़ 'शिखर'
यकीन रख तेरे हक़ में ही फैसला होगा ।

राजन सिंह ''शिखर''
सहायक आचार्य (संगीत)

पंछी

मैं उन्मुक्तपंछी स्वच्छंद उड़ान भरता हूं ।
तज कर रंज शोक व्यथा सारी
मैं पंख अपने फैलता हूं ।
अनंत जिज्ञासाएं भरकर अपनी श्वास में
अंतरिक्ष में गोता लगाता हूं ।
विराम देकर मन की आकांक्षाओं को
फिर धरा पर उतर आता हूं ।
वट वृक्ष की टहनी चुनकर ,
दूब, दूर्वा और कुश शाद से
मैं नीड नया बनाता हूं ।
मैं उन्मुक्त पंछी स्वच्छंद उड़ान भरता हूं ।
तज कर रज शोक व्यथा सारी
मैं पंख अपने फैलाता हूं ।

सरोज टेलर
सहायक आचार्य (स. अध्ययन)

Activities Are Fun

Young Minds@Work

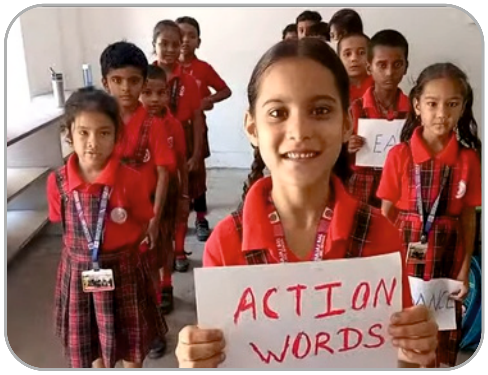

Rising Stars

Winners of Inter School Competition

Celebrations

Janmashtami

Christmas

Rakshabandhan

Dandiya

Diya Decoration

Lohri

Outing

(School Students at Jalmahal)

Childrens' Day Celebration

Screening Of
"I Am Kalam"

Teachers' Day Celebration - 05 September 2024

Teacher's Day, as always, was celebrated with great enthusiasm, honoring the cherished bond between guru and shishya (teacher and disciple). This year, the event was marked by deep reverence and heartfelt participation within our institution. Students expressed their respect by presenting flowers to their teachers, while B.Ed students infused vibrancy into the celebration by organizing a fashion show. Adding to the significance of the occasion, the School Principal led a plantation drive, promoting environmental awareness among students. The event concluded with a delightful luncheon hosted by the esteemed management members, making the day truly memorable.

बी.एड नवीन सत्रारंभ (2024–26) – 11 सितंबर 2024

मुख्य अतिथि सना मुस्तफा ज़ैदी (बैंक प्रबंधक, एस.बी.आई.) द्वारा पौधारोपण एवं दीप प्रज्जवलन

बी.एड द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा मनमोहक नृत्य प्रस्तुति

Brushstrokes of Emotion

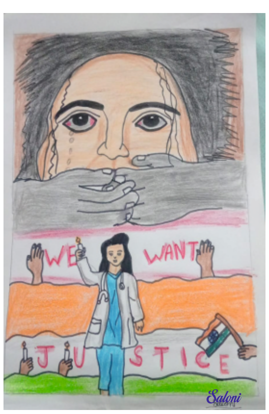

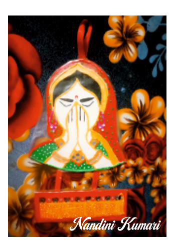

Academic Brilliance

B.Ed. 2023-25

Navraaj Kanwar (Ist)
B.Ed. II year

Sonam Solanki (IInd)
B.Ed. II year

Shraddha Meena (IIIrd)
B.Ed. II year

Ruchika Kumawat (Ist)
B.Ed I year

Kumkum Prajapati (IInd)
B.Ed I year

Jaya Nakwal (IIIrd)
B.Ed. I year

Winners

(Inter College Debate Competition)

Human Rights Day

Nukkad Natak

Inter House Poster Competition

Inter House Quiz Competition

स्वस्थ बचपन, खुशहाल जीवन

30 नवम्बर 2024, शनिवार को क्रैक दा वैलनेस कोड (C.W.C.) के प्रबंध निदेशक डॉ. राहुल मेहरा (यूनेस्को में भारत के विद्यालयी स्वास्थ्य प्रतिनिधि) और विंग कमांडर विद्यकान्त काला के माध्यम से गीता गिरधर सभागार में ''स्वस्थ बचपन, खुशहाल जीवन'' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की निदेशक डॉ. गार्गी गोपेश समेत अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने सभा को संबोधित किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय शिक्षा सचिव श्री कृष्ण कुणाल जी ने भी बच्चों में न्यूट्रिशियन एवं बैलेंस डाइट और उनके समग्र विकास पर ध्यान देने की बात की। इसी के साथ उन्होंने बच्चों को मोबाइल से दूरी बनाये रखने और खेलकूद में भाग लेने की सलाह दी।

इस कार्यक्रम में विभिन्न सरकारी एवं निजी स्कूलों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक तथा विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों ने स्वस्थ जीवन शैली जीने, नशा मुक्ति और संतुलित आहार से सम्बन्धित बातों के माध्यम से लोगों को जागरूक होने का संदेश दिया।

डॉ. राहुल मेहरा ने अपने अनुभव साझा करते हुए असंतुलित खानपान के कारण होने वाली बीमारियों की जानकारी दी। उन्होने बच्चों व अभिभावकों को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने की सलाह दी।

मंच संचालक शरद कामरा जी ने बेहतरीन अंदाज में कार्यक्रम को रौचक बनाए रखा।

छात्रवृत्ति वितरण समारोह

सन् 2021–22 से गीता बजाज बाल मंदिर के मेधावी छात्र व छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप स्वर्गीय जसदेव सिंह जी (पद्मश्री, पद्मविभूषण व राजस्थान रत्न से विभूषित) मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली के सौजन्य से 2 लाख 50 हजार की छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष यह छात्रवृत्ति 11 सितम्बर 2024 को सुश्री ऋचा भटियानी (गीता दीदी की पडदोहित्री) द्वारा प्रदान की गई।

समस्त बाल मंदिर परिवार व अभिभावकगण, संस्था सचिव श्री गुरदेव सिंह जी एवं उनके समस्त परिवार के हार्दिक आभारी हैं।

पंजाबी लोकगीत – लोहड़ी

सुंदर मुंदरिये हो !
सुंदर मुंदरिये हो !
तेरा कौन विचारा हो !
दुल्ला भट्टी वाला हो !
दुल्ले धी व्याही हो !
सेर शक्कर पाई हो !
कुड़ी दे जेबे पाई
कुड़ी दा लाल पटाका हो !
कुड़ी दा सालू पाटा हो !
सालू कौन समेटे हो !
चाचे चूरी कुट्टी हो !
जमिदारां लुट्टी हो !
जमींदार सदाए हो !
गिन–गिन पोले लाए हो !
इक पोला रह गया !
सिपाही फड के लै गया !
सिपाही ने मारी ईट
भावें रो भावें पिट
सानू दे दे लोहड़ी
तुहाडी
बनी रवे जोड़ी !

प्रकृति बुद्धा
बाल मंदिर

GEETANJALI

Publisher
Gurdev Singh

Executive Editor
Dr. Deepti Tripathi
Prabhakar Jha

Editorial team
Neera Pareek
Naval Kumar
Neena Sharma
Drishti Kriplani

Graphics & Design
Praveen Singh
Khushboo Sharma

गीता बजाज बाल मंदिर संस्थान

मोती डूंगरी सर्किल, गोविन्द मार्ग, जयपुर (राज.)

फोन– 0141–2624143, 0141–2623730 ई–मेल : geetabajajsansthan.jaipur@gmail.com

नवीन सत्र 2025–26 के लिए सभी कक्षाओं में प्रवेश जारी हैं...